Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-3* *Issue-5* *May 2026***

www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

भारतीय दर्शन के प्रभाव में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में परम्परागत ज्ञान बनाम वर्तमान शिक्षा प्रणाली

डॉ. सरिता बहुगुणा

असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत बाल गंगा महाविद्यालय सेन्दुल केमर टिहरी गढ़वाल

Article Info: *(Recieved- 18/03/2026, Accept- 12/04/2026, Published- 10/05/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i50016

सारांश

भारतीय शिक्षा परम्परा का आधार केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक विकास में निहित रहा है। वेद, उपनिषद, योग, न्याय और वेदांत जैसे भारतीय दर्शन आत्मबोध, तर्क, अनुशासन, सदाचार, सत्यनिष्ठा तथा प्रकृति और समाज के साथ संतुलित जीवन पर बल देते हैं। इसके विपरीत, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी दक्षता, कौशल विकास, रोजगारपरकता तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा की आवश्यकताओं पर केंद्रित है। प्रस्तुत आलेख में परम्परागत भारतीय ज्ञान और वर्तमान शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए दोनों की विशेषताओं, शिक्षण पद्धतियों, मूल्यों, पाठ्यचर्या तथा उद्देश्यों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि परम्परागत ज्ञान चरित्र निर्माण, नैतिकता, आत्मानुशासन और जीवन–दृष्टि को विकसित करता है, जबकि आधुनिक शिक्षा वैज्ञानिक चिंतन, नवाचार, तकनीकी क्षमता और समस्या–समाधान कौशल को प्रोत्साहित करती है। दोनों प्रणालियों को एक–दूसरे के विरोधी रूप में देखने के स्थान पर उनके समन्वय की आवश्यकता है। आधुनिक तकनीक, डिजिटल संसाधनों और प्रयोगात्मक शिक्षण के साथ भारतीय दार्शनिक मूल्यों को जोड़कर शिक्षा को अधिक मानवीय, संतुलित और जीवनोपयोगी बनाया जा सकता है। ऐसा समन्वित शिक्षा मॉडल विद्यार्थियों में वैज्ञानिक चेतना के साथ सांस्कृतिक आत्मबोध, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक विवेक और समग्र व्यक्तित्व का विकास करने में सहायक सिद्ध होगा।

कुंजी शब्द– भारतीय दर्शन, परम्परागत ज्ञान, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था, नैतिक शिक्षा, वेदांत, योग दर्शन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समग्र व्यक्तित्व विकास।

1. प्रस्तावना

प्रस्तावना के अंतर्गत यह स्वीकार किया जाता है कि प्रत्येक समाज का ज्ञान तंत्र उसकी सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं ऐतिहासिक विरासत का प्रतिबिंब होता है। भारतीय दर्शन पर आधारित परम्परागत ज्ञान प्रणालियों का संबंध न केवल जीवन जीने के तरीके से है, बल्कि यह शिक्षा के आधारभूत सिद्धांतों एवं मूल्य मानदंडों का भी आधार प्रदान करता है। इस पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में तीव्र अनुभव, आत्म–साक्षात्कार एवं नैतिक विकास पर विशेष बल दिया गया है, जो व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए आवश्यक माना गया। भारतीय दार्शनिक विचारधाराएँ जैसे वेदांत, योग, न्याय, और वैदिक परंपराएँ जीवन के गूढ़ रहस्यों तथा ब्रह्मांड के अध्ययन से जुड़ी हुई हैं, जो मानसिक एवं आध्यात्मिक चेतना का विकास करती हैं। इन दर्शन का अध्ययन और अभ्यास न केवल व्यक्तिवादी बल्कि सामाजिक एवं पारिस्थितिकी दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इनें मानव जीवन के उत्तरदायित्व, नैतिकता एवं समुदाय के सहयोग को मजबूत बनाना माना गया है। दूसरी ओर, आधुनिक शिक्षा

प्रबंधनों में प्राचीन ज्ञान के तत्वों का समावेश नई तकनीकों, वैज्ञानिक मानकों, तात्क्षणिक उपयोगिता और व्यवहारिक क्षमताओं पर केंद्रित है। इसके फलस्वरूप, शिक्षा में संप्रेषण की प्रक्रिया तेजी से बदली है, और विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस संदर्भ में यह समझना जरूरी है कि परंपरागत ज्ञान एवं आधुनिक शिक्षा के बीच एक संवादात्मक एवं समन्वयात्मक संबंध विकसित करना आवश्यक है, ताकि छात्रों का सम्पूर्ण विकास हो और वे स्वतंत्र, नैतिक एवं सामाजिक रूप से जागरूक नागरिक बन सकें। इस विश्लेषण के माध्यम से यह स्पष्ट है कि दोनों प्रणालियों के समागम से ही सतत विकास और मानवता का उज्जवल भविष्य संभव है।

2. आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का परिचय

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की स्थापना औद्योगिक क्रांति एवं आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के प्रभाव से हुई है, जिसका लक्ष्य व्यक्तियों को व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान से लैस करना है। यह व्यवस्था मुख्य रूप से वैज्ञानिक परिभाषाओं, तर्कशास्त्र और प्रगति की दिशा में केंद्रित है, जो वर्तमान समाज के व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करती है। इसमें शिक्षा की मुख्य प्रणालियाँ जैसे कि शिक्षण पद्धतियों, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, और तकनीकी उपकरण शामिल हैं, जिनके माध्यम से छात्र का समग्र व व्यक्तित्व विकास होता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मुख्यतः मूलभूत विषय, कौशल विकास, शोध और प्रौद्योगिकी का समावेश होता है, जो आर्थिक एवं सामाजिक परिदृश्य में प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

यह व्यवस्था धीरे–धीरे परम्परागत ज्ञान से भटक विविध ज्ञान शाखाओं एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने की दिशा में विकसित हुई है। इसके फलस्वरूप, शिक्षा में वैज्ञानिकता, तर्क एवं अध्यात्मिक मूल्यों के साथ–साथ तंत्रिका एवं क्रियाशील कौशलों का महत्व बढ़ा है। वर्तमान में, तकनीक के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव आया है, जिससे विद्यार्थियों को विश्वसनीय एवं सटीक जानकारी अधिक आसानी से उपलब्ध हो रही है। इस प्रणाली का उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, नवाचार और समस्या–समाधान के कौशल का विकास है, ताकि वे व्यावहारिक जीवन में सक्षम बन सकें।

सामाजिक और आर्थिक विकास के अनुरूप, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में परम्परागत ज्ञान के आदर्शों का समावेश आवश्यक है, परंतु इसकी प्राथमिकता वर्तमान तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रगति को मोदीकरण करना है। इस क्रम में, परम्परागत मूल्यों एवं दर्शन के स्थान को न केवल समझने बल्कि उनका आधुनिक संदर्भ में उचित महत्व देने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। कुल मिलाकर, यह प्रणाली परम्परागत धारणाओं और आधुनिक आविष्कारों के बीच संतुलन स्थापित करने का एक प्रयास है, ताकि शिक्षा प्राचीन परंपराओं का संरक्षण करते हुए भी नई आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित की जा सके।

3. परम्परागत ज्ञान क्या है

परम्परागत ज्ञान की धारणा भारतीय सांस्कृतिक और दार्शनिक परम्पराओं का आधारभूत स्तंभ है। यह ज्ञान मुख्यतः जीवन के अनुभव, नैतिक मूल्य, एवं जीवनोपयोगी कौशलों पर केंद्रित होता है। भारतीय परम्परा में इसे शास्त्र, अनुभाव, एवं पुराणिक ग्रंथों के माध्यम से संजोया गया है, ओर इसकी विधिवत रीतियों एवं अध्यात्मिक विधियों में निहित है। यह ज्ञान प्रायः सर्वज्ञान के स्रोत के रूप में माना जाता है और यह व्यक्ति के संपूर्ण विकास, आत्मा की अनुभूति, और विश्व के रहस्यों का अध्ययन करता है। परम्परागत ज्ञान सामाजिक परिवेश, संस्कार, एवं धार्मिक आधारों पर आधारित होता है, जो समाज की एकता और सभ्यता को मजबूत बनाता है। इसमें शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिकता का विकास, तथा जीवन में संतुलन स्थापित करना है। यह ज्ञान अक्सर शास्त्र, उपदेश, और परंपरागत शिक्षा प्रणाली के माध्यम से प्रतिरोधी और स्थायी रूप से संजोया जाता रहा है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की तुलना में, यह अधिक जड़ता और परंपराओं के प्रति श्रद्धा की झलक देता है, परंतु इसमें जीवन का वास्तविक ज्ञान, नैतिक मूल्यों, तथा आत्मिक उन्नयन का विशेष महत्व रहता है। संक्षेप में, परम्परागत ज्ञान भारतीय जीवन–दृष्टि का अभिन्न हिस्सा है, जो परंपराओं, अनुभवों और आध्यात्मिक पथों के माध्यम से व्यक्ति के समग्र विकास में सहायक होता है।

4. भारतीय दर्शनों का सार

भारतीय दर्शनों का सार हमारे दृष्टिकोण, मूल्यांकन और शिक्षण पर गहरा प्रभाव डालता है। इन दर्शनों में व्यवहार, ज्ञान, और जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण निहित हैं, जो व्यक्तिवाद, सामाजिक समरसता तथा नैतिक

मूल्यों को महत्व देते हैं। वेदांत, योग, न्याय, तथा वैदिक दर्शन जैसे दर्शनशास्त्र न केवल व्यक्तित्व विकास के आधारभूत सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं, बल्कि कर्म, धर्म और मोक्ष की परिकल्पना भी करते हैं। इन दर्शनों की विशेषता है कि ये भारतीय जीवन दर्शन के विभिन्न पहलुओं को समेटते हैं, और जीवन का समग्र एवं संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

यद्यपि आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक सोच, तकनीकी कौशल और व्यावहारिक ज्ञान पर केंद्रित है, परन्तु भारतीय दर्शन में निहित नैतिकता, आत्मचिंतन और व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के प्रति दृष्टिकोण का समावेश आवश्यक होता गया है। भारतीय दर्शनों का यह सार परंपरागत ज्ञान को मानवीय मूल्यों के साथ संतुलित करके व्यक्तियों में आत्मज्ञानी, चिंतनशील और जिम्मेदार नागरिक बनाने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन्हें आधुनिक शिक्षा में सम्मिलित करने से शिक्षार्थियों का मानवीय दृष्टिकोण विकसित होता है और वे समाज व पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक बनते हैं।

अतः, भारतीय दर्शनों का सार न केवल पारंपरिक परंपरा का संरक्षक है, बल्कि यह आधुनिक शिक्षा प्रणालियों को अधिक समतुल्य, नैतिक और जीवन–संबंधित बनाने की दिशा में भी प्रेरणा प्रदान करता है। ये दर्शनों का सार शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आधारभूत आधारशिला है, जो व्यक्तियों का सम्पूर्ण विकास सुनिश्चित करता है।

5. दार्शनिक प्रभावः वैदिक, योग, न्याय, वेदांत आदि

भारतीय दर्शनों के प्रभाव में दार्शनिक विचारधाराएँ जैसे वेदांत, योग, न्याय एवं वैदिक दर्शन ने परम्परागत ज्ञान के स्वरूप और उसकी शिक्षण पद्धतियों को गहरा रूप से प्रभावित किया है। वेदांत का आदर्शन उत्कृष्ट नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का आधार है, जिसमें आत्मा, ब्रह्म और माया की अवधारणा के माध्यम से जीवन के लक्ष्य एवं उद्देश्य स्पष्ट होते हैं। यह दर्शन आत्मानुभूति एवं ध्यान के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति पर बल देता है, जिससे शिक्षण में आंतरिक जागरूकता और आत्मिक विकास की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। योग दर्शन मानव जीवन के संपूर्ण स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और शारीरिक ऊर्जा को विकसित करने की प्रक्रिया को केन्द्रित करता है। इसकी प्रणाली शारीरिक अभ्यास, ध्यान और उचित आहार के साथ योगिक ज्ञान को संबंधित कर मानसिक स्थिरता एवं सामंजस्य उत्पन्न करती है।

न्याय दर्शन तर्क एवं ज्ञान की प्राप्ति के विधियों को विस्तार से उद्घाटित करता है, जहां तर्क के माध्यम से सत्य और ज्ञान की खोज को प्राथमिकता दी जाती है। इसने वैज्ञानिक विचारधारा और विश्लेषणात्मक चिन्तन को विकसित करने में सहायक भूमिका निभाई। वेदांत दर्शन का प्रभाव व्यक्तिगत मोक्ष एवं आत्मा के परमानंद की खोज पर जोर देकर, शिक्षण में अंतर्ज्ञान और आत्म–ज्ञान के माध्यम से व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक जीवन का समग्र विकास सुनिश्चित करता है। इन दार्शनिक प्रभावों से आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, आत्मिक मूल्यों और तर्क–आधारित शिक्षण पद्धतियों का सम्यक समावेश हुआ है, जो ज्ञान की प्रकृति एवं उसके शिक्षण तरीकों को गहराई से प्रभावित करता है। इन दर्शन के आधार पर विकसित शिक्षण दृष्टिकोण न केवल प्रौढ़ जीवन कौशल सिखाते हैं, बल्कि व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास में भी सहायक सिद्ध होते हैं।

6. परम्परागत ज्ञान और आधुनिक पाठ्यचर्या का तुलनात्मक विश्लेषण

परम्परागत ज्ञान और आधुनिक पाठ्यचर्या के बीच स्पष्ट तुलना करना आवश्यक है ताकि उनके बीच मौजूद संरचनात्मक और ऐतिहासिक भिन्नताओं को समझा जा सके। परम्परागत ज्ञान मुख्यतः अनुभवी सिद्धांतों पर आधारित रहा है, जिसमें समाज की जीवंत परंपराएँ, धार्मिक मान्यताएँ और जीवन संचालित तरीके सम्मिलित हैं। यह ज्ञान मुख्य रूप से मौखिक परंपरा, रीति–रिवाज एवं सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से आपस में जुड़ा हुआ था। इसमें जीवन के अनुभवों, नैतिकता, तथा पर्यावरण के साथ सहजीवन का महत्व प्रकाश डाला जाता था, जो जीवन के हर क्षेत्र में प्राचीन दार्शनिक और आचार्य परंपराओं का सार्थक प्रतिबिंब था।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली, विशेषतः पश्चिमी प्रभाव से संचालित, जहां बौद्धिक और तकनीकी कौशल पर अधिक ध्यान दिया जाता है, वह विश्लेषणात्मक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रमुखता देता है। इसकी फोकस दक्षता, प्रतिस्पर्धा एवं नवीनता पर केन्द्रित होती है, जो बहुमुखी कौशल एवं नवीन सोच को विकसित करने का प्रयास करता है। इसमें पाठ्यक्रम का व्यवस्थित रूप से संरचना, प्रयोगात्मक गतिविधियां एवं प्रौद्योगिकी का समावेश प्रमुख हैं। इससे छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान, खोज व नवाचार का अवसर मिल है, जो वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए

अनिवार्य माना जाता है।

जहाँ परम्परागत ज्ञान जीवन के मूल तत्वों, नैतिक शिक्षण एवं सांस्कृतिक मान्यताओं के साथ गहरे जुड़े हुए हैं, वहीं आधुनिक शिक्षण पद्धतियां तर्क, प्रयोग और वैज्ञानिक जांच पर अधिक केंद्रित हैं। दोनों दृष्टिकोणों में इस प्रकार के भिन्नताएँ अंतर्निहित हैं कि परम्परागत ज्ञान जीवन के अनुभव और नैतिकता का आधार है, जबकि आधुनिक पद्धति तर्क और तात्कालिक उपयोगिता पर बल देती है। फिर भी, दोनों का समागम ही समुचित विकास का आधार है, जिसमें परम्परागत ज्ञान के नैतिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षा के व्यावहारिक उपकरणों के साथ जोड़ा जाए, तो अधिक प्रभावी और संस्कारित शिक्षा व्यवस्था का विकल्प उभर सकता है।

7. मूल्य और मानकरू नैतिक शिक्षण का स्थान

मूल्य और मानक का निर्धारण शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षण की महत्ता को रेखांकित करता है। पारंपरिक भारतीय दर्शन और शिक्षण परंपराएँ न केवल ज्ञान की प्राप्ति पर बल देती हैं, बल्कि चरित्र का विकास भी शिक्षण की अनिवार्य शाखा मानती हैं। इनमें अच्छे आचरण, सदाचार, सत्यनिष्ठा, और समर्पण जैसी मान्यताएँ प्रमुख स्थान रखती हैं, जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास सुनिश्चित करती हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मुख्यतः व्यावसायिक उपलब्धियों और वैज्ञानिक कौशलों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे नैतिकता के स्थान को चुनौती मिलती है।

परन्तु, भारतीय दर्शनों की ख्याति इन मूल्यों को शिक्षण का आधार बनाने और नैतिक मानकों को स्थापित करने में सहायक सिद्ध होती है। इन दर्शनों से मिली शिक्षाएं न केवल व्यक्तित्व विकास का माध्यम हैं, बल्कि समाज में नैतिकता, सहिष्णुता और सत्यनिष्ठा के प्रति जागरूकता भी लाती हैं। वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी दक्षता या विद्या का अर्जन नहीं, बल्कि एक सकारात्मक चरित्र का निर्माण भी है। अतः, वर्तमान प्रणाली में नैतिक मूल्य शिक्षा का स्थान उतना ही आवश्यक है जितना कि ज्ञान का संकलन।

इसके लिए शिक्षण विधियों में बदलाव आवश्यक है, जहाँ नैतिक शिक्षण को पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए। प्रेरक गुणवत्ता और नैतिक चरित्र के प्रति जागरूकता के माध्यम से विद्यार्थियों के अंदर नैतिक मानकों का स्वाभाविक विकास संभव है। इस परिवर्तन से न केवल व्यक्तियों का सम्पूर्ण विकास होता है, बल्कि समाज में भी नैतिक मूल्यों का संवर्धन होता है। अतः, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मूल्य और मानकों का निरंतर संरक्षण कर नैतिक शिक्षण को आत्मसात करना शिक्षण का मुख्य उद्देश्य बन जाना चाहिए।

8. शिक्षण पद्धतियों में बदलाव कैसे आये

शिक्षण पद्धतियों में बदलाव का कारण सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तन हैं। इस पद्धति में शिक्षक का नैतिक मूल्यों और व्यक्तित्व का प्रभाव निर्णायक था। समय के साथ, विशेषकर औद्योगिक क्रांति एवं पश्चिमी संस्थानों के आगमन से, शिक्षण पद्धतियों में परिवर्तन हुआ। अब शिक्षण में प्रौद्योगिकी का प्रयोग बढ़ता गया और पाठ्यक्रम में शोध आधारित एवम व्यावहारिक शिक्षा का समावेश हुआ। नयें तकनीकी उपकरणों, जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट और डिजिटल शिक्षण सामग्री, ने शिक्षण के ढांचे को प्रतिस्थापित कर दिया है। शिक्षकों का दृष्टिकोण भी बदला; वह अब ज्ञानात्मक शिक्षक के स्थान पर मार्गदर्शक बन गए हैं, जो छात्र की रचनात्मकता एवं स्वाधीनता को प्रोत्साहित करते हैं। समानांतर में, शिक्षकों का प्रशिक्षण, मूल्यांकन प्रणाली और शिक्षण तरीकों में निरंतर नवाचार हुआ है। इस परिवर्तन का प्रभाव यह है कि छात्र अब अधिक सक्रिय, सहभागी और आत्मनिर्भर बन रहा है। इसके साथ ही, शिक्षण का स्वरूप अधिक इंटरैक्टिव, प्रायोगिक और व्यक्तिगतकरण की दिशा में बढ़ा है। इस परिवर्तन को समझने के लिए आवश्यक है कि हम पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के बीच सम्यक तुलनात्मक विवेचन करें, जिससे शिक्षा में प्रभावी सुधार और भारतीय दृष्टिकोण की समरसता संभव हो सके।

9. तकनीक और ज्ञान का संयोजन

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में तकनीक का उपयोग शिक्षण की पद्धतियों एवं ज्ञान के प्रभाव को व्यापक रूप से बदल रहा है। पारंपरिक परम्परागत ज्ञान का आधार स्वयं अनुभव, संवाद और श्रद्धा रहा है, जबकि वर्तमान प्रणाली में डिजिटल उपकरण, इंटरनेट और स्वचालित संसाधनों का महत्व बढ़ गया है। इन नवीन तकनीकों का उद्देश्य न केवल सूचनाओं का त्वरित प्रसार है, बल्कि शिक्षार्थियों के गतिशील और रचनात्मक विकास को भी समर्थ बनाना है। इस प्रक्रिया में, पारंपरिक ज्ञान की गहरी समज़, आत्मिक अनुभूति एवं मानवीय मूल्य वर्तमान

तकनीकी साधनों के माध्यम से अधिक सुसंगतता और व्यावहारिकता प्राप्त कर रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, वीडियो लेक्चर्स, ऑनलाइन परीक्षाएँ, आदि शिक्षण में सहजता और पहुँच में वृद्धि कर रहे हैं, जिससे विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती जा रही है। ऐसा भी देखा गया है कि भारतीय दर्शनों की धारना यह मानती है कि ज्ञान का मूल स्रोत विकसित मानव चेतना है, और तकनीक तब अपनी सार्थक भूमिका निभाती है जब यह परम्परागत दृष्टिकोणों के साथ मेल खाती है। इस संयोजन से न केवल शिक्षा का विस्तार होता है, बल्कि छात्रों में आत्मानुशासन, नैतिक मूल्य और समावेशी सोच का विकास भी सुनिश्चित होता है। अतः, तकनीक और परम्परागत ज्ञान का समागम शिक्षा प्रणाली में एक प्रगतिशील एवं संतुलित दृष्टिकोण को उत्पन्न करता है, जो आधुनिक समय की आवश्यकताओं एवं भारतीय दर्शन की मौलिक मान्यताओं दोनों के अनुरूप है।

10. निष्कर्ष

भारतीय दर्शनों के प्रभाव में परम्परागत ज्ञान और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के मध्य एक जटिल संवाद स्थापित हुआ है। परम्परागत ज्ञान में जीवन के व्यापक पहलुओं को समेटे हुई सम्यक और नैतिक शिक्षा पर बल दिया जाता है, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली विशेष रूप से विज्ञान, तकनीक और व्यावहारिक कौशल पर केंद्रित है। यदि दोनों के बीच तुलनात्मक दृष्टि से देखें, तो परम्परागत ज्ञान के मूल मैत्रीपूर्ण, नैतिक और सांस्कृतिक मापदंड आधुनिक शिक्षा की कड़ाई से प्रतिस्पर्धा में हैं। भारतीय दर्शनकृवेद, उपनिषद, योग, न्याय और वेदांत हमेशा से नैतिक मूल्यों, जीवन दर्शन और आत्मबोध पर बल देते आए हैं, जो वर्तमान शिक्षण में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के पालन का आधार बन सकते हैं। इस प्रकार, परम्परागत ज्ञान का आधुनिक शिक्षा में समावेश शिक्षा के व्यापक दृष्टिकोण को संतुलित कर समाज में सदाचार व नैतिकता को स्थापित करने में मददगार हो सकता है। इससे न केवल ज्ञान का वैविध्य बढ़ेगा, बल्कि विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों की स्पष्ट समझ एवं विवेक विकसित होगा। इसलिए, आवश्यक है कि परम्परागत ज्ञान की शिक्षण पद्धतियों और मूल्यशिक्षण को आधुनिक शिक्षण के साथ समन्वित किया जाए, जिससे छात्र नवीनतम तकनीक का अध्यापन प्राप्त करते हुए भी अपने सांस्कृतिक एवं नैतिक आधार को मजबूत कर सके। बैठक में बदलाव के साथ–साथ, तकनीकी प्रगति और भौतिक ज्ञान के साथ परम्परागत ज्ञान का संयोजन संप्रेषण का एक प्रभावी माध्यम बन सकता है। इस प्रकार, भारतीय दर्शनों के समावेश से न केवल शिक्षण के दायरे का विस्तार होता है, बल्कि उससे समाज के मूल मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन भी संभव है। अतः, परम्परागत ज्ञान को आधुनिक शिक्षा में समुचित स्थान देकर हम एक संतुलित, नैतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण कर सकते हैं, जो प्रत्येक विद्यार्थी का सम्पूर्ण व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास सुनिश्चित कर सके।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची

1. अरविंद, श्री। (1956)। ऑन एजुकेशन खशिक्षा के विषय में,। श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन विभाग।
2. दासगुप्ता, एस. एन. (2004)। ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी ख्भारतीय दर्शन का इतिहास, (खंड 1)। मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
3. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।
4. हिरियन्ना, एम. (2009)। आउटलाइन्स ऑफ इंडियन फिलॉसफी ख्भारतीय दर्शन की रूपरेखा,। मोतीलाल बनारसीदास।
5. कृष्णमूर्ति, जे. (1953)। एजुकेशन एंड द सिग्निफिकेंस ऑफ लाइफ खशिक्षा और जीवन का महत्त्व,। हार्पर।
6. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2005)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005। लेखक।
7. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2023)। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की

रूपरेखा 2023। लेखक।

8. राधाकृष्णन, एस. (1923)। इंडियन फिलॉसफी ख्भारतीय दर्शन, (खंड 1)। जॉर्ज एलन एंड अनविन।
9. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। (2023इ)। भारतीय ज्ञान प्रणाली पर शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं अभिमुखीकरण के लिए दिशा–निर्देश। लेखक।

Cite this Article

"डॉ. सरिता बहुगुणा', 'भारतीय दर्शन के प्रभाव में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में परम्परागत ज्ञान बनाम वर्तमान शिक्षा प्रणाली", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:5, May 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."